كَلَّا ؕ بَلۡ لَّا یَخَافُوۡنَ الۡاٰخِرَةَ ؕ﴿۵۳﴾ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذۡكِرَةٌ ۚ﴿۵۴﴾ فَمَنۡ شَآءَ

हरगिज़ नहीं बल्कि उन को आख़िरत का डर नहीं[37] हां हां बेशक वोह[38] नसीहत है तो जो चाहे

ذَكَرَهٗ ؕ﴿۵۵﴾ وَ مَا یَذۡكُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهۡلُ التَّقۡوٰی

उस से नसीहत ले और वोह क्या नसीहत मानें मगर जब **अल्लाह** चाहे वोही है डरने के लाइक़

وَ اَهۡلُ الۡمَغۡفِرَةِ ﴿۵۶﴾ ع

और उसी की शान है मग़्फ़िरत फ़रमाना

ایاتها ۴۰ | ۷۵ سُوۡرَةُ الۡقِیٰمَةِ مَكِّیَّةٌ ۳۱ | رکوعاتها ۲

सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

لَاۤ اُقۡسِمُ بِیَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ ۙ﴿۱﴾ وَ لَاۤ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ ﴿۲﴾ اَیَحۡسَبُ

रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे[2] क्या आदमी[3]

الۡاِنۡسَانُ اَلَّنۡ نَّجۡمَعَ عِظَامَهٗ ؕ﴿۳﴾ بَلٰی قٰدِرِیۡنَ عَلٰۤی اَنۡ نُّسَوِّیَ بَنَانَهٗ ﴿۴﴾

येह समझता है कि हम हरगिज़ उस की हड्डियां जम्अ़ न फ़रमाएंगे क्यूं नहीं हम क़ादिर हैं कि उस के पोर ठीक बना दें[4]

सालिहीन जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने शाफ़ेअ़ किया है वोह ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे काफ़िरों की शफ़ाअ़त न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअ़त भी मुयस्सर न आएगी। **34 :** या'नी मवाइज़े क़ुरआन से ए'राज़ करते हैं। **35 :** या'नी मुश्रिकीन नादानी व बे वुक़ूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस त़रह़ शेर को देख कर वोह भागता है इसी त़रह़ येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तिलावते क़ुरआन सुन कर भागते हैं **36 :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हम हरगिज़ आप की इत्तिबाअ़ न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि येह **अल्लाह** तआ़ला की किताब है फ़ुलां बिन फ़ुलां के नाम, हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के इत्तिबाअ़ का हुक्म देते हैं। **37 :** क्यूं कि अगर उन्हें आख़िरत का ख़ौफ़ होता तो अदिल्ला क़ाइम होने और मो'जिज़ात ज़ाहिर होने के बा'द इस क़िस्म की सरकशाना ह़ीला बाज़ियां न करते। **38 :** क़ुरआन शरीफ़ **1 :** सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चालीस 40 आयतें, एक सो निनानवे 199 कलिमे, छ[6] सो बानवे 692 ह़र्फ़ हैं। **2 :** बा वुजूद मुत्तक़ी व कसीरुत्ताअ़त होने के कि तुम मरने के बा'द ज़रूर उठाए जाओगे। **3 :** यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअ़्स है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी बिन रबीआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी न मानूं और आप पर ईमान न लाऊं, क्या **अल्लाह** तआ़ला बिखरी हुई हड्डियां जम्अ़ कर देगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिस के मा'ना येह हैं कि क्या इस काफ़िर का येह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेज़ा रेज़ा हो कर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मक़ामात में मुन्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उन का जम्अ़ करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है, येह ख़याले फ़ासिद उस के दिल में क्यूं आया और उस ने क्यूं नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वोह मरने के बा'द दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। **4 :** या'नी उस की उंगलियां जैसी थीं बिग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दें और उन की हड्डियां उन के मौक़अ़ पर पहुंचा दें, जब छोटी छोटी हड्डियां इस त़रह़ तरतीब दे दी जाएं तो बड़ी का क्या कहना।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۚ﴿۵﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا

बल्कि आदमी चाहता है कि उस की निगाह के सामने बदी करे[5] पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा फिर जिस दिन

بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ﴿۷﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ﴿۸﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ﴿۹﴾ يَقُوْلُ

आंख चुंधयाएगी[6] और चांद गहेगा[7] और सूरज और चांद मिला दिये जाएंगे[8] उस दिन

الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿۱۱﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ

आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊं[9] हरगिज़ नहीं कोई पनाह नहीं उस दिन तेरे रब ही की त़रफ़ जा कर

الْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿۱۲﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿۱۳﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ

ठहरना है[10] उस दिन आदमी को उस का सब अगला पिछला जता दिया जाएगा[11] बल्कि आदमी

عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ

ख़ुद ही अपने ह़ाल पर पूरी निगाह रखता है और अगर उस के पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा तुम याद करने की जल्दी में क़ुरआन

لِتَعْجَلَ بِهٖ ؕ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۚۖ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

के साथ अपनी ज़बान को ह़रकत न दो[12] बेशक उस का मह़फ़ूज़ करना[13] और पढ़ना[14] हमारे ज़िम्मे है तो जब हम उसे पढ़ चुकें[15] उस वक़्त उस

قُرْاٰنَهٗ ۚ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ؕ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ﴿۲۰﴾ وَ

पढ़े हुए की इत्तिबाअ़ करो[16] फिर बेशक उस की बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो तुम पाउं तले की दोस्त रखते हो[17] और

تَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ﴿۲۳﴾

आख़िरत को छोड़े बैठे हो कुछ मुंह उस दिन[18] तरो ताज़ा होंगे[19] अपने रब को देखते[20]

5 : इन्सान का इन्कारे बअ़्स इश्तिबाह और अ़दम दलील के बाइ़स नहीं है बल्कि ह़ाल येह है कि वोह बह़ाले सुवाल भी अपने फ़ुजूर पर क़ाइम रहना चाहता है कि ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा। (جمل) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया कि आदमी बअ़्स व ह़िसाब को झुटलाता है जो उस के सामने है, सईद बिन जुबैर ने कहा कि आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र, येही कहता रहता है अब तौबा करूंगा अब अ़मल करूंगा यहां तक कि मौत आ जाती है और वोह अपनी बदियों में मुब्तला होता है। **6 :** और ह़ैरत दामन गीर होगी **7 :** तारीक हो जाएगा और रोशनी ज़ाइल हो जाएगी। **8 :** येह मिला देना या तुलूअ़ में होगा दोनों मग़रिब से तुलूअ़ करेंगे या बे नूर होने में। **9 :** जो इस ह़ाल व दह्शत से रिहाई मिले **10 :** तमाम ख़ल्क़ उस के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर होगी, ह़िसाब किया जाएगा, जज़ा दी जाएगी, जिसे चाहेगा अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसे चाहेगा अपने अ़द्ल से जहन्नम में डालेगा। **11 :** जो उस ने किया है **12 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जिब्रीले अमीन के वह़्य पहुंचा कर फ़ारिग़ होने से क़ब्ल याद फ़रमाने की सई फ़रमाते थे और जल्द जल्द पढ़ते और ज़बाने अक़्दस को ह़रकत देते **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मशक़्क़त गवारा न फ़रमाई और क़ुरआने करीम का सीनए पाक में मह़फ़ूज़ करना और ज़बाने अक़्दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मए करम पर लिया और येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमा कर ह़ुज़ूर को मुत़्मइन फ़रमा दिया। **13 :** आप के सीनए पाक में **14 :** आप का **15 :** या'नी आप के पास वह़्य आ चुके **16 :** इस आयत के नाज़िल होने के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم वह़्य को ब इत़्मीनान सुनते और जब वह़्य तमाम हो जाती तब पढ़ते थे। **17 :** या'नी तुम्हें दुन्या की चाहत है। **18 :** या'नी रोज़े क़ियामत **19 : अल्लाह** तआ़ला के ने'मत व

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾ كَلَّآ اِذَا

और कुछ मुंह उस दिन बिगड़े हुए होंगे[21] समझते होंगे कि उन के साथ वोह की जाएगी जो कमर को तोड़ दे[22] हां हां जब

بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿۲۶﴾ وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾ وَ

जान गले को पहुंच जाएगी[23] और लोग कहेंगे[24] कि है कोई झाड़ फूंक करे[25] और वोह[26] समझ लेगा कि येह जुदाई की घड़ी है[27] और

الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِنِ الْمَسَاقُ ﴿۳۰﴾ فَلَا صَدَّقَ

पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी[28] उस दिन तेरे रब ही की त़रफ़ हांकना है[29] उस ने[30] न तो सच माना[31]

وَلَا صَلّٰى ﴿۳۱﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۳۲﴾ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾

और न नमाज़ पढ़ी हां झुटलाया और मुंह फेरा[32] फिर अपने घर को अकड़ता चला[33]

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۴﴾ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۵﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी[34] क्या आदमी इस घमन्ड में है कि आज़ाद छोड़

سُدًى ﴿۳۶﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿۳۷﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ

दिया जाएगा[35] क्या वोह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए[36] फिर ख़ून की फटक हुवा तो उस ने पैदा फ़रमाया[37]

करम पर मसरूर चेहरों से अन्वार ताबां, येह मोमिनीन का ह़ाल है। **20 :** उन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा, येही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा, क़ुरआन व ह़दीस व इज्माअ़ के दलाइले कसीरा इस पर क़ाइम हैं और येह दीदार बे कैफ़ और बे जिहत होगा। **21 :** सियाह, तारीक, ग़मज़दा, मायूस, येह कुफ़्फ़ार का ह़ाल है। **22 :** या'नी वोह शिद्दते अ़ज़ाब और होलनाक मसाइब में गिरिफ़्तार किये जाएंगे। **23 :** वक़्ते मौत **24 :** जो उस के क़रीब होंगे **25 :** ताकि इस को शिफ़ा ह़ासिल हो **26 :** या'नी मरने वाला **27 :** कि अहले मक्का और दुन्या सब से जुदाई होती है। **28 :** या'नी मौत का कर्ब व सख़्ती से पाउं बाहम लिपट जाएंगे या येह मा'ना हैं कि दोनों पाउं कफ़न में लपेटे जाएंगे या येह मा'ना हैं कि शिद्दत पर शिद्दत होगी एक दुन्या की जुदाई की सख़्ती उस के साथ मौत का कर्ब या एक मौत की सख़्ती और इस के साथ आख़िरत की सख़्तियां। **29 :** या'नी बन्दों का रुजूअ़ उसी की त़रफ़ है वोही उन में फ़ैसला फ़रमाएगा। **30 :** या'नी इन्सान ने, मुराद इस से अबू जहल है। **31 :** रिसालत और क़ुरआन को **32 :** ईमान लाने से **33 :** मुतकब्बिराना शान से, अब इस से ख़िताब फ़रमाया जाता है **34 :** जब येह आयत नाज़िल हुई नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बत़्ह़ा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उस से फ़रमाया ''اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى'' या'नी तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी तो अबू जहल ने कहा ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या तुम मुझे धम्काते हो ? तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मक्का के पहाड़ों के दरमियान मैं सब से ज़ियादा, क़वी, ज़ोर आवर, साह़िबे शौकतो क़ुव्वत हूं, मगर क़ुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमान ज़रूर पूरा होने वाला था, चुनान्चे ऐसा ही हुवा और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ बुरी त़रह़ मारा गया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर उम्मत में एक फ़िरऔ़न होता है मेरी उम्मत का फ़िरऔ़न अबू जहल है, इस आयत में उस की ख़राबी का ज़िक्र चार मरतबा फ़रमाया गया **पहली** ख़राबी बे ईमानी की ह़ालत में ज़िल्लत की मौत। **दूसरी** ख़राबी क़ब्र की सख़्तियां और वहां की शिद्दतें। **तीसरी** ख़राबी मरने के बा'द उठने के वक़्त गिरिफ़्तारे मसाइब होना। **चौथी** ख़राबी अ़ज़ाबे जहन्नम। **35 :** कि न उस पर अम्र व नही वग़ैरा के अह़काम हों, न वोह मरने के बा'द उठाया जाए, न उस से आ'माल का ह़िसाब लिया जाए, न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाए, ऐसा नहीं **36 :** रेह़म में, तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उस का तकब्बुर करना इतराना और पैदा करने वाले की ना फ़रमानी करना निहायत बे जा है। **37 :** इन्सान बनाया।

www.dawateislami.net

فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ

फिर ठीक बनाया[38] तो उस से[39] दो जोड़े बनाए[40] मर्द और औ़रत क्या जिस ने येह

بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِـىَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع ٢١٨

कुछ किया वोह मुर्दे न जिला सकेगा

اٰياتها ٣١ ﴿٧٦﴾ سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ ٩٨ ركوعاتها ٢

सूरए दह्‌र मदनिय्या है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्‌रबान रह़्म वाला[1]

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾ اِنَّا

बेशक आदमी पर[2] एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था[3] बेशक हम ने

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٢﴾

आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से[4] कि उसे जांचें[5] तो उसे सुनता देखता कर दिया[6]

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا

बेशक हम ने उसे राह बताई[7] या ह़क़ मानता[8] या नाशुक्री करता[9] बेशक हम ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

के लिये तय्यार कर रखी हैं ज़न्जीरें[10] और तौ़क़[11] और भड़क्ती आग[12] बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से

كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا

जिस की मिलौनी (आमेज़िश) काफ़ूर है वोह काफ़ूर क्या ? एक चश्मा है[13] जिस में से अल्लाह के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने मह़ल्लों में उसे जहां चाहें

38 : उस के आ'ज़ा को कामिल किया उस में रूह़ डाली 39 : या'नी मनी से या इन्सान से 40 : दो सिफ़तें पैदा कीं 1 : सूरए दह्‌र इस का नाम सूरए इन्सान भी है। मुजाहिद व क़तादा और जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है, बा'ज़ ने इस को मक्किय्या कहा है। इस में दो 2 रुकूअ़, इक्तीस 31 आयतें, दो सो चालीस 240 कलिमे और एक हज़ार चव्वन 1054 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नफ़्ख़े रूह़ से पहले चालीस साल का 3 : क्यूं कि वोह एक मिट्टी का ख़मीर था, न कहीं उस का ज़िक्र था, न उस को कोई जानता था, न किसी को उस की पैदाइश की ह़िक्मतें मा'लूम थीं, इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उस के ह़म्ल में रहने का ज़माना। 4 : मर्द व औ़रत की 5 : मुकल्लफ़ कर के अपने अम्र व नही से। 6 : ताकि दलाइल का मुशाहदा और आयात का इस्तिमाअ़ कर सके। 7 : दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, ताकि हो 8 : या'नी मोमिन सईद 9 : काफ़िर शक़ी। 10 : जिन्हें बांध कर दोज़ख़ की त़रफ़ घसीटे जाएंगे 11 : जो गलों में डाले जाएंगे 12 : जिस में जलाए जाएंगे। 13 : जन्नत में।

www.dawateislami.net